LITERATURE AND BOOKS

खुदा की कसम – सआदत हसन मंटो

By **Meri Baatein** — May 16, 2021

उधर से मुसलमान और इधर से हिंदू अभी तक आ जा रहे थे। कैंपों के कैंप भरे पड़े थे जिनमें मिसाल के तौर पर तिल धरने के लिए वाकई कोई जगह नहीं थी। लेकिन इसके बावजूद उनमें लोग ठुसे जा रहे थे। गल्ला नाकाफी है , सेहत की सुरक्षा का कोई इंतजाम नहीं , बीमारियां फैल रही हैं , इसका होश किसको था ! एक अफरा – तफरी का वातावरण था।

सन 48 का आरंभ था। संभवत मार्च का महीना था। इधर और उधर दोनों तरफ रजाकारों के जरिए से अपहृत औरतों और बच्चों की बरामदगी का प्रशंसनीय काम शुरू हो चुका था। सैकड़ों मर्द , औरतें , लडके और लड़कियां इस नेक काम में हिस्सा ले रहे थे। मैं जब उनको काम में लगे देखता तो मुझे बड़ी आश्चर्यजनक खुशी हासिल होती। यानी खुद इंसान इंसान की बुराइयों के आसार मिटाने की कोशिश में लगा हुआ था। जो अस्मतें लुट चुकी थीं , उनको और अधिक लूट – खसोट से बचाना चाहता था – किसलिए ? इसलिए उसका दामन और अधिक धब्बों और दागों से भरपूर न हो ? इसलिए कि वह जल्दी – जल्दी अपनी खून से लिथड़ी उंगलियां चाट ले और अपने जैसे पुरुषों के साथ दस्तरखान पर बैठकर रोटी खाए ? इसलिए कि वह इंसानियत का सुई – धागा लेकर , जब एक – दूसरे आंखें बंद किए हैं , अस्मतों के चाक रफू कर दे। कुछ समझ में नहीं आता था लेकिन उन रज़ाकारों की जद्दोजहद फिर काबिले कद्र मालूम होती थी। उनको सैकड़ों मुश्किलों का सामना करना पड़ा था। हजारों बखेड़े उन्हें उठाने पड़ते थे , क्योंकि जिन्होंने औरतें और लड़कियां उठाई थीं , अस्थिर थे। आज इधर कल उधर। अभी इस मोहल्ले में , कल उस मोहल्ले में। और फिर आसपास के आदमी उनकी मदद नहीं करते थे। अजीब अजीब दास्तानें सुनने में आती थीं।

एक संपर्क अधिकारी ने मुझे बताया कि सहारनपुर में दो लड़कियों ने पाकिस्तान में अपने मां – बाप के पास जाने से इनकार कर दिया। दूसरे ने बताया कि जब जालंधर में जबर्दस्ती हमने एक लड़की को निकाला तो काबिज के सारे खानदान ने उसे यूं अलविदा कही जैसे वह उनकी बहू है और किसी दूर – दराज सफर पर जा रही है। कई लड़कियों ने मां – बाप के खौफ से रास्ते में आत्महत्या कर ली। कुछ सदमे से पागल हो चुकी थीं , कुछ ऐसी भी थी जिन्हें शराब की लत पड़ चुकी थी। उनको प्यास लगती तो पानी की बजाय शराब मांगती और नंगी – नंगी गालियां बकतीं। मैं उन बरामद

की हुई लड़कियों और औरतों के बारे में सोचता तो मेरे मन में सिर्फ फूले हुए पेट उभरते। इन पेटों का क्या होगा ? उनमें जो कुछ भरा है , उसका मालिक कौन बने , पाकिस्तान या हिंदुस्तान ? और वह नौ महीने की बारवरदारी , उसकी उज्रत पाकिस्तान अदा करेगा या हिंदुस्तान ? क्या यह सब जालिम फितरत या कुदरत के बहीखाते में दर्ज होगा ? मगर क्या इसमें कोई पन्ना खाली रह गया है ? बरामद औरतें आ रही थीं , बरामद औरतें जा रही थीं। मैं सोचता था ये औरतें भगाई हुईं क्यों कहलाई जाती थीं ? इन्हें अपहृत कब किया गया है ? अपहरण तो बड़ा रोमैंटिक काम है जिसमें मर्द और औरतें दोनों शामिल होते हैं। वह एक ऐसी खाई है जिसको फांदने से पहले दोनों रूहों के सारे तार झनझना उठते हैं। लेकिन यह अगवा कैसा है कि एक निहत्थी को पक़ड़ कर कोठरी में कैद कर लिया ? लेकिन वह जमाना ऐसा था कि तर्क – वितर्क और फलसफा बेकार चीजें थीं। उन दिनों जिस तरह लोग गर्मियों में भी दरवाजे और खिड़कियां बंद कर सोते थे , इसी तरह मैंने भी अपने दिल – दिमाग में सब खिड़कियां दरवाजे बंद कर लिये थे। हालांकि उन्हें खुला रखने की ज्यादा जरूरत उस वक्त थी , लेकिन मैं क्या करता। मुझे कुछ सूझता नहीं था। बरामद औरतें आ रही थीं। बरामद औरतें जा रही थीं। यह आवागमन जारी था , तमाम तिजारती विशेषताओं के साथ। और पत्रकार , कहानीकार और शायर अपनी कलम उठाए शिकार में व्यस्त थे। लेकिन कहानियों और नजमों का एक बहाव था जो उमड़ा चला आ रहा था। कलमों के कदम उखड़ – उखड़ जाते थे। इतने सैद थे कि सब बौखला गए थे। एक संपर्क अधिकारी मुझसे मिला। कहने लगा , तुम क्यों गुमसुम रहते हो ? मैंने कोई जवाब न दिया। उसने मुझे एक दास्तान सुनाई।

अपहृत औरतों की तलाश में हम मारे – मारे फिरते हैं। एक शहर से दूसरे शहर , एक गांव से दूसरे गांव , फिर तीसरे गांव फिर चौथे। गली – गली , मोहल्ले – मोहल्ले , कूचे – कूचे। बड़ी मुश्किलों से लक्ष्य मोती हाथ आता है।

मैंने दिल में कहा , कैसे मोती ... मोती , नकली या असली ?

तुम्हें मालूम नहीं हमें कितनी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है , लेकिन मैं तुम्हें एक बात बताने वाला था। हम बॉर्डर के इस पार सैकड़ों फेरे कर चुके हैं। अजीब बात है कि मैंने हर फेरे में एक बुढ़िया को देखा। एक मुसलमान बुढ़िया को – अधेड़ उम्र की थी। पहली बार मैंने उसे जालंधर में देखा था – परेशान , खाली दिमाग , वीरान आंखें , गर्द व गुबार से अटे हुए बाल , फटे हुए कपड़े। उसे तन का होश था न मन का। लेकिन उसकी निगाहों से यह जाहिर था कि किसी को ढूंढ रही है। मुझे बहन ने बताया कि यह औरत सदमे के कारण पागल हो गई है। पटियाला की रहने वाली है। इसकी इकलौती लड़की थी जो इसे नहीं मिलती। हमने बहुत जतन किए हैं उसे ढूंढने के लिए मगर नाकाम रहे हैं। शायद दंगों में मारी गई है , मगर यह बुढ़िया नहीं मानती। दूसरी बार मैंने उस पगली को सहारनपुर के बस अड्डे पर देखा। उसकी हालत पहले से कहीं ज्यादा खराब और जर्जर थी। उसके होठों पर मोटी मोटी पपड़ियां जमी थीं। बाल साधुओं के से बने थे। मैंने उससे बातचीत की और चाहा कि वह अपनी व्यर्थ तलाश छोड़ दे। चुनांचे मैंने इस मतलब से बहुत पत्थरदिल बनकर कहा , माई तेरी लड़की कत्ल कर दी गई थी।

पगली ने मेरी तरफ देखा , ' कत्ल ?... नहीं। ' उसके लहजे में फौलादी यकीन पैदा हो गया। ' उसे कोई कत्ल नहीं कर सकता। मेरी बेटी को कोई कत्ल नहीं कर सकता। ' और वह चली गई अपनी व्यर्थ तलाश में। मैंने सोचा , एक तलाश और फिर ... । लेकिन पगली को इतना यकीन था कि उसकी बेटी पर कोई कृपाण नहीं उठ सकती। कोई तेजधार या कुंद छुरा उसकी गर्दन पर नहीं बढ़ सकता। क्या वह अमर थी ? या क्या उसकी ममता अमर थी ? ममता तो खैर अमर होती है। फिर क्या वह अपनी ममता ढूंढ रही थी। क्या इसने उसे कहीं खो दिया ? तीसरे फेरे पर मैंने उसे फिर देखा। अब वह बिल्कुल चीथड़ों में थी। करीब – करीब नंगी। मैंने उसे कपड़े दिए मगर उसने कुबूल न किए। मैंने उससे कहा , माई मैं सच कहता हूं , तेरी लड़की पटियाले में ही कत्ल कर दी गई थी।

उसने फिर फौलादी यकीन के साथ कहा , ' तू झूठ कहता है। '

मैंने उससे अपनी बात मनवाने की खातिर कहा , ' नहीं मैं सच कहता हूं। काफी रो – पीट लिया है तुमने। चलो मेरे साथ मैं तुम्हें पाकिस्तान ले चलूंगा। ' उसने मेरी बात न सुनी और बड़बड़ाने लगी। बड़बड़ाते हुए वह एकदम चौंकी। अब उसके लहजे में यकीन फौलाद से भी ठोस था , ' नहीं मेरी बेटी को कोई कत्ल नहीं कर सकता। '

मैंने पूछा , क्यों ?

बुढ़िया ने हौले – हौले कहा , ' वह खूबसूरत है। इतनी खूबसूरत कि कोई कत्ल नहीं कर सकता। उसे तमाचा तक नहीं मार सकता। ' मैं सोचने लगा , क्या वाकई वह इतनी खूबसूरत थी। हर मां की आंखों में उसकी औलाद चांद का टुकड़ा होती है। लेकिन हो सकता है वह लड़की वास्तव में खूबसूरत हो। मगर इस तूफान में कौन सी खूबसूरती है जो इंसान के खुरदरे हाथों से बची है। हो सकता है पगली इस थोथे ख्याल को धोखा दे रही हो। फरार के लाखों रास्ते हैं। दुख एक ऐसा चौक है जो अपने इर्दगिर्द लाखों बल्कि करोड़ों सड़कों का जाल बना देता है।

बॉर्डर के इस पार कई फेरे हुए। हर बार मैंने उस पगली को देखा। अब वह हड्डियों का ढांचा रह गई थई। नजर कमजोर हो गई थीं। टटोल – टटोलकर चलती थी , लेकिन उसकी तलाश जारी थी। बड़ी तल्लीनता से। उसका यकीन उसी तरह स्थिर था कि उसकी बेटी जिंदा है। इसलिए कि उसे कोई मार नहीं सकता।

बहन ने मुझसे कहा , ' इस औरत से मगजमारी फिजूल है। इसका दिमाग चल चुका है। बेहतर यही है कि तुम इसे पाकिस्तान ले जाओ और पागलखाने में दाखिल करा दो। '

मैंने उचित न समझा। उसकी यह भ्रामक तलाश तो उसकी जिंदगी का एकमात्र सहारा थी। जिसे मैं उससे छीनना नहीं चाहता ता। मैं उसे एक लंबे – चौड़े पागलखाने से , जिससे वह मीलों की यात्रा तय करके अपने पांवों के आंबलों की प्यार बुझा ही थी , उठाकर एक छोटी सी चारदीवारी में कैद करना नहीं चाहता था।

आखरी बार मैंने उसे अमृतसर में देखा। उसकी दयनीय स्थिति ऐसी थी कि मेरी आंखों में आंसू आ गए। मैंने फैसला कर लिया कि उसे पाकिस्तान ले जाऊंगा और पागलखाने में दाखिल करा दूंगा। एक फरीद के चौक में खड़ी अपनी आधी अंधी आंखों से इधर – उधर देख रही थी। चौक में काफी चहलपहल थी। मैं बहन के साथ एक दुकान पर बैठा एक अपहृत ल़ड़की के बारे में बात कर रहा था , जिसके बारे में हमें यह सूचना मिली थी कि वह बाजार सबूनिया में एक हिंदू बनिये के घर मौजूद है। यह गुफ्तगू खत्म हुई कि मैं उठा कि उस पगली को झूठसच कहकर पाकिस्तान ले जाने के लिए तैयार करूं। तभी एक जोड़ा उधर से गुजरा। औरत ने घूंघट निकाला हुआ था। छोटा सा घूंघट। उसके साथ एक सिख नौजवान था। बड़ा छैलछबीला , तंदुरुस्त। तीखे – तीखे नक्शों वाला। जब ये दोनों उस पगली के पास से गुजरे तो नौजवान एकदम ठिठक गया। उसने दो कदम पीछे हटकर औरत का हाथ पकड़ लिया। कुछ इस अचानक तौर पर कि लड़की ने अपने छोटा सा घूंघट उठाया। लट्ठे की धुली हुई सफेद चादर के चौखटे में मुझे एक ऐसा गुलाबी चेहरा नजर आया जिसका हुस्न बयान करने में मेरी जबान लाचार है। मैं उनके बिल्कुल पास था। सिख नौजवान ने सौंदर्य की देवी से उस पगली की तरफ इशारा करते हुए धीमे से कहा , तुम्हारी मां।

लड़की ने एक पल के लिए पगली की तरफ देखा और घूंघट छोड़ दिया और सिख नौजवान का बाजू पकड़कर भींचे हुए लहजे में कहा , चलो।

और वे दोनों सड़क से जरा इधर हटकर तेजी से आगे निकल गए। पगली चिल्लाई , ' भागभरी ... भागभरी। '

वह सख्त परेशान थी। मैंने पास जाकर उससे पूछा , ' क्या बात है माई ?'

वह कांप रही थी , ‘ मैंने उसको देखा है .. मैंने उसको देखा है। ’ मैंने पूछा , ‘ किसे ?’

उसके माथे के नीचे दो गड्ढों में उसकी आंखों के बेनूर ढेले हरकत कर रहे थे , ‘ अपनी बेटी को … भागभरी को। ’

मैंने फिर उससे कहा , ‘ वह मर – खप चुकी है माई। ’

उसने चीखकर कहा , ‘ तुम झूठ कहते हो। ’

मैंने इस बार उसे पूरा यकीन दिलाने की खातिर कहा , ‘ मैं खुदा की कसम खाकर कहता हूं , वह मर चुकी है। ’ यह सुनते ही वह पगली चौक में ढेर हो गई।

- **Download Saadat Hasan Manto Story – Khuda Ki Kasam PDF FREE**

About The Author – Saadat Hasan Manto

Saadat Hasan Manto was a writer, playwright and author born in Ludhiana active in British India and later, after the partition, in Pakistan. Writing mainly in the Urdu language, he produced 22 collections of short stories, a novel, five series of radio plays, three collections of essays and two collections of personal sketches. His best short stories are held in high esteem by writers and critics. Manto was known to write about the hard truths of society that no one dared to talk about.

सआदत हसन मंटो (11 मई 1912 – 18 जनवरी 1955) उर्दू लेखक थे, जो अपनी लघु कथाओं, बू, खोल दो, ठंडा गोश्त और चर्चित टोबा टेकसिंह के लिए प्रसिद्ध हुए। कहानीकार होने के साथ-साथ वे फिल्म और रेडिया पटकथा लेखक और पत्रकार भी थे। अपने छोटे से जीवनकाल में उन्होंने बाइस लघु कथा संग्रह, एक उपन्यास, रेडियो नाटक के पांच संग्रह, रचनाओं के तीन संग्रह और व्यक्तिगत रेखाचित्र के दो संग्रह प्रकाशित किए।

Buy Saadat Hasan Manto Books on Amazon

1. **25 Sarvshreshth Kahaniya – Manto – 25 सर्वश्रेष्ठ कहानियां**
2. **Thanda Gosht Aur Anya Kahaniyaan – ठंडा गोश्त और अन्य कहानियां**
3. **Toka Tek Singh Aur Anya Kahaniyaan – टोबा टेक सिंह और अन्य कहानियां**
4. **Boo Aur Anya Kahaniyaan – बू और अन्य कहानियां**
5. **Syah Hashiye Aur Anya Kahaniyaan – स्याह हाशिये और अन्य कहानियां**